संतपिटर्स बर्ग से बलामद्वीप, रूस
सितम्बर ०८–०६, २००६

सन्देश संख्या १७५

एकादश अन्तर्दृष्टि

१. सत्य सांत्वना नहीं देता, झूठी आशा नहीं देता और अपेक्षा की वृद्धि नहीं करता । परन्तु यह निराशा की स्थिति भी नहीं है और नहीं किसी त्रुटि और द्वन्द्व की स्थिति है, अपितु यह पवित्रता, अस्तित्वमय आनन्द और करुणा की स्थिति है।

२. विभिन्न विश्वास–पद्धतियों के मनमोहक झूठ, विभिन्न प्रकार के आश्वासन, आग्रह, दर्प, तुष्टीकरण, महिमामण्डन, सान्त्वना, सुविधा, मनोव्याधि प्रदायी अवधारणायें, निष्कष, विडम्बना, विकृति, और विभ्रान्ति प्रदान करते हैं ।

३. इच्छाओं के ठहरे जल में क्यों फँसे पड़े हो? प्रज्ञा–ऊर्जा की अवस्था में उतरने का साहस क्यों नहीं करते, जो नदी की धारा की तरह समुद्र से मिलाने के लिए निरन्तर प्रवाहमान है ।

४. मनुष्य के जीवन की क्रिया पूर्णता में होती है । राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक या सामाजिक क्रियाकलाप पूर्ण नहीं होते। 'मैं' से परे की अवस्था यानी कि प्रेम ही एकमात्र पूर्णता है ।

५. अन्तरतम में 'अस्ति–भाव' अर्थात् अस्तित्व के दर्शन होने तक 'अहं–भाव' का परत–दर–परत अवसान ही स्वाध्याय है ।

६. 'जो है' को देखने या जानने के लिए प्रोत्साहित होना, जीवन का ढंग है। इसमें कोई द्वन्द्व नहीं होता । जबकि 'ऐसा होना चाहिए' के लिए प्रयास करना, मन का ढंग है और इसमें सदैव द्वन्द्व और अराजकता होती है ।

७. अस्तित्व का आशीर्वाद अभी और यहीं है, जो कि असीम एवं सरल है, विस्मयपूर्ण एवं रहस्यपूर्ण है । इसे कोई भी पवित्र ग्रंथ उद्घाटित नहीं कर सकता । यह न माँगा जाता है, और न ही दिया जाता है ।

८. पूर्ण अनुक्रिया में लेशमात्र भी द्वन्द्व या दुविधा नहीं होती, जबकि खण्डित प्रतिक्रिया सदैव द्वन्द्वयुक्त और दुविधाग्रस्त होती है ।

९. 'जो है' यदि प्रस्फुटित हो तब 'ऐसा होना चाहिए' कि अवधारणा समाप्त हो जाती है और तब जीवन में आशीर्वाद ही शेष रह जाता है ।

१०. 'सुनना' – एक जीवन्त प्रक्रिया है, एक ज्वलन्त वस्तु है तथा एक गम्भीर विषय है । अतः सुनने की प्रक्रिया में अतीत का दबाव एवं पूर्वाग्रहों का हस्तक्षेप उचित नहीं है ।

११. विचार करुणा का शत्रु है । जाग्रत–चैतन्य की अवस्था में करुणा की लौ जलती रहती है । इसमें विचार जलकर भस्म बन जाता है और वही शिव अर्थात् लय–निर्विचार–निर्दोषता–परमकरुणा–बमभोले का शृंगार होता है।

।। साधुओं के वलाम द्वीप की जय हो ।।
(यह नए जेरूसलेम के नाम से भी जाना जाता है)